Topics - 4

अव्ययीभावः समासः

नाऽव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः

अदन्तादव्ययीभावात् सुपो न लुक् तस्य पञ्चमीं विना अमादेशः स्यात्।

अकारान्त अव्ययीभाव के पश्चात् सुप् का लुक् (लोप) नहीं होता है किन्तु पञ्चमी को छोड़कर अन्य विभक्तियों के बाद 'सुप्' के स्थान पर 'अम्' आदेश हो जाता है। उदाहरण के लिए 'अधिगोप सु' में 'अधिगोप' अकारान्त अव्ययीभाव है, अतः प्रकृत सूत्र से उसके पश्चात् सुप् 'सु' के स्थान पर 'अम्' होकर 'अधिगोप-अम्' रूप बनता है। तब पूर्वरूप एकादेश हो 'अधिगोपम्' रूप सिद्ध होता है।

तृतीया-सप्तम्योर्बहुलम्।

अदन्तादव्ययीभावात् तृतीयासप्तम्योर्बहुलम्-अम्भावः स्यात्। उपकृष्णम् उपकृष्णेन। मद्राणां समृद्धिः - सुमद्रम्। यवनानां व्यृद्धिः - दुर्यवनम्। मक्षिकाणामभावः निर्मक्षिकम्। हिमस्यात्ययः - अतिहिमम्। निद्रा संप्रति न युज्यते इति अतिनिद्रम्। हरिशब्दस्य प्रकाशः - इतिहरि।

विष्णोः पश्चात् - अनुविष्णु ।
योग्यता - वीप्सा - पदार्थानतिवृत्ति -
सादृश्यानि यथार्थाः । रूपस्य योग्य
मनुरूपम्, अर्थमर्थं प्रत्यर्थं, शक्ति
मनतिक्रम्य यथाशक्ति ।

अकारान्त अव्ययीभाव के पश्चात् तृतीया (टा) और सप्तमी (ङि) विभक्ति के स्थान पर बहुलता से 'अम्' आदेश होता है। तृतीया और सप्तमी विभक्ति के स्थान पर कभी 'अम्' आदेश होता है और कभी नहीं भी। उदाहरण के लिए। 'कृष्ण के समीप' अर्थ में 'कृष्ण ङस् उप-०' इस विग्रह में समीप अर्थ में वर्तमान अव्यय 'उप' से अव्ययं विभक्ति-० से समास आदि होकर 'उपकृष्ण' रूप बनेगा। यहाँ तृतीया विभक्ति की विवक्षा में 'उपकृष्ण टा' रूप बनने पर अकारान्त अव्ययीभाव 'उपकृष्ण' के पश्चात् तृतीया विभक्ति 'टा' के स्थान पर प्रकृत सूत्र से 'अम्' होकर पूर्ववत् 'उपकृष्णम्' रूप सिद्ध होता है। 'अम्' के अभाव पक्ष में 'टा' के स्थान पर 'इन' और गुणादेश होकर 'उपकृष्णेन' रूप बनता है।

इसी प्रकार सप्तमी विभक्ति में भी 'अम्' पक्ष में 'उपकृष्णम्' और अमाभाव पक्ष में 'उपकृष्णे' ये दो रूप बनते हैं।

अव्ययीभावे चाऽकाले।

सहस्य सः स्यादव्ययीभावे न तु काले। हरेः सादृश्यम् - सहरि। ज्येष्ठस्यानुपूर्व्येण इति - अनुज्येष्ठम्। चक्रेण - युगपत् - सचक्रम्। सदृशः सख्या ससखि। क्षत्राणां संपत्तिः - सक्षत्रम्। तृणमप्यपरित्यज्य - सतृणमत्ति। अग्नि ग्रन्थपर्यन्तमधीते - साग्नि।

यदि कालवाचक उत्तरपद परे न हो, तो अव्ययीभाव समास में 'सह' के स्थान पर 'स' आदेश होता है। उदाहरण के लिए अव्ययीभाव समास 'सहहरि' में उत्तरपद 'हरि' कालवाचक नहीं है, अतः प्रकृत सूत्र से 'सह' के स्थान पर 'स' होकर 'सहरि' रूप सिद्ध होता है।

यथाऽसादृश्ये । असादृश्य एव यथाशब्दः समर्प्यते । तेनेह न - यथा हरिस्तथा हरः । हरेरुपमानत्वं यथाशब्दो द्योतयति । तेन 'सादृश्य' इति वा 'यथार्थ' इति वा प्राप्तं निषिध्यते ।

यावत्यवधारणे ।
यावन्तः श्लोकास्तावन्तोऽनुष्टुप्प्रमाणा यावच्छ्लोकम् ।